अध्ययन सामग्री

विषय – हिन्दी

सेमेस्टर २ - द्वितीय (II) स्नातकोत्तर

प्रश्न-पत्र - पंचम (आधुनिक काल)

'भारतेन्दु युगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ'

पदनाम - डॉ. स्मिता जैन
एसोसिएट प्रोफेसर
हिन्दी विभाग
एच. डी. जैन कॉलेज, आरा

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

निश्चित वर्ष प्रारंभ होकर किसी निश्चित वर्ष में समाप्त नहीं होती।' डॉ. रामचन्द्र शुक्ल भी १८६८ से १८८३ तक के २५ वर्ष को काल की नयी धारा– प्रथम उत्थान के रुप में स्वीकृत करते हैं। मिश्र बंधुओं ने भी १८६८–१८८८ इन १९ वर्षों को भारतेन्दु युग कहा हैं। डॉ. केसरीनारायण शुक्ल ने १८६५ से १९०० तक के ३५ वर्षों को भारतेन्दु काल माना है। मार्क्सवादी ऋषि डॉ. रामविलास शर्मा भी १८६८ से १९०० तक के काल को भारतेन्दु युग ही मानते हैं किन्तु अधिकांश विद्वानों ने डॉ.नगेन्द्र के कालखन्ड को (भारतेन्दु युग) योग्य एवं तर्कशुध्द रुप में स्विकार किया हैं।

रीतिकाल का अंत हमने १८४३ माना हैं तो १९४३ से १९६७ के बीच किस प्रकार का काव्य लिखा जा रहा होगा ऐसा प्रश्न पाठकों के मन में उभर सकता हैं। डॉ. नगेन्द्र ने उसका भी उत्तर दिया हैं, '१८४३ से १९६७ तक का कृतित्व न तो पूर्णतः रीतिकाल के प्रभाव–क्षेत्र के अन्तर्गत आता हैं और न इसमें भारतेन्दु–युग की पुनर्जागरणमूलक प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। अतः इसका अनुशीलन भारतेन्दु युग की पृष्ठभूमि के रुप में किया जा सकता है। क्यों की इस कालखन्ड में भक्ति, श्रृंगार, नीति, हास्य, वीर भावनाओं की साहित्य सृजना हो रही थी। काव्यशास्त्रीय ग्रंथो का सृजन भी हो रहा था किन्तु आधुनिकता से उसका जुड़ाव पूर्णतः नहीं था। नये ढंग का लेखन मात्र भारतेन्दु से ही प्रारंभ हो जाता हैं। भारतेन्दु युग की कविता का लक्ष्य किसी सामंत राजा को रिझाना, प्रसन्न करना नहीं था, लोक जागरण फैलाना था। इसलिए उन्होंने काव्य रुप भी बदले और काव्य प्रवृत्तियाँ भी। परिवेश तो बदल ही रहा था।

५अ.२ भारतेन्दु युगीन काव्य की प्रवृत्तियाँ :–

भारतेन्दु बाबु को आधुनिक हिन्दी साहित्य का प्रवर्तक माना जाता हैं। भाषा, काव्य रुपों की विविधता, नया जागरण संदेश उन्हीं की कविता द्वारा हिन्दी साहित्य में आया। इसलिए हिन्दी नवजागरण के साहित्यिक अग्रदूत भी उन्हें कहा जाता हैं। श्रृंगार और विलासिता के केंचूल को उन्होंने दूर किया था और कविता को जनसाधारण के निकट लाया। नायिका का नखशिख वर्णन, और विरह की व्याकुल का स्थान, देश की जनता की दुर्दशा का वर्णन, देश स्वाभिमान की भावना ने ले लिया। यही कारण है की श्रृंगार, अलंकार, रीति निरुपण, प्रकृति का उद्दीपन चित्रण प्राय: कम होता गया। भक्ति, नीति भी पिछड़ती गयी। जातीय, राष्ट्रीय प्रबोधन को पराश्रय मिला। राष्ट्रीय भावनाओं का देश भक्ति का चित्रण इस कालखंड में अधिक देखा जा सकता हैं। शिक्षा का महत्व, विधवा विवाह का समर्थन, बालविवाह का विरोध, अंग्रेजी राजनीति की आलोचना, राजभक्ति, गो–रक्षा जैसे विषय कविता के केन्द्र में आए। ब्रिटिशों ने भौतिक साधनों तर्क पद्धतियों शासन प्रबंधन से नया युग पहले ही लाया था। मुद्रण तंत्र का अविष्कार, समाचारपत्रों का विकास आदि ने जन–जागरण को फैलाने में महत्वपूर्ण भुमिका निभाई । समाजसुधार एवं देश सुधार की भावना पल्लवित–पुष्पीत होती गई।

भारतेन्दु काल के प्रमुख अन्य साहित्यकारों ने भी भारतेन्दु की प्रवृत्तियों को स्वीकारा और साहित्य सृजन किया। जिनमें महत्वपुर्ण है, बदरीनारायण चौधरी प्रेमघन, प्रतापनारायण मिश्र, जगन्मोहन सिंह, राधाकृष्ण दास, जगन्नाथदास रत्नाकर, नवनीत चतुर्वेदी

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

आदि। डॉ. नगेन्द्र ने राष्ट्रीयता, सामाजिक चेतना, भक्तिभावना, श्रृंगारिकता, प्रकृति चित्रण, हास्य–व्यंग, रीति–निरुपण, समस्यापुर्ति, काव्यानुवाद, कलापक्ष के अन्तर्गत आनेवाली प्रवृत्तियों का विश्लेषण अपने इतिहास में किया हैं।

१. देशभक्ति और राजभक्ति :–

भारतेन्दु युग में देशभक्ति के साथ राजभक्ति की प्रसार भावना का अविष्कार हुआ हैं। देशभक्ति के अंतर्गत ही राष्ट्रीयता का विस्तार मात्र उनकी उपलब्धि रहीं हैं। वीर प्रताप, छत्रसाल, राजा शिवाजी ने क्षेत्र विशेष वीरता, राष्ट्रीयता का प्रतिपादन किया। भूषण जैसे कवियों ने। उसी प्रकार का चित्रण किया परन्तु स्वयं बाबू भारतेन्दु ने क्षेत्रियता से ऊपर संपूर्ण राष्ट्र की नब्ज को टटोलने का प्रयास किया। इस काल के कवियों में देशभक्ति एवं राजभक्ति की भावना का कविता द्वारा अभिव्यक्त किय हैं। डॉ. नगेन्द्र के अनुसार देशभक्ति की यह भावना बाद में मैथिलीशरण गुप्त की 'भारत–भारती' में लक्षित हुई स्वयं भारतेन्दु की 'विजयिनी' विजय 'वैजयन्ती', प्रेमधन की 'आनंद अरुणोदय', प्रतापनारायण मिश्र की 'महापर्व', राधाकृष्णदास की 'भारत बारहमासा' और विनय शीर्षक कविताएँ देशभक्ति से पुरित एवं प्रेरित हैं –

''भीतर भीतर सब रस चूसै,
हंसि हंसि के तन मन धन मूसै।
जाहिर बातन में अति तेज,
क्यों सखि सज्जन! नहीं अंगरेज।''

जैसी कविता लिखकर अंग्रेजों द्वारा किये जानेवाले शोषण का चित्र वे खींचते हैं । देशवासियों को जागृत करते दिखतें हैं ।

तो दूसरी ओर अंग्रेजों द्वारा देश की संपत्ती का होनेवाला दोहन देखकर मन भारी हो जाता हैं –

अंग्रेज राज सुख साज सजे सब भारी,
पै धन विदेश चल जात यह आति स्वारी।

का भाव उनकी कविता में व्यक्त हुआ हैं। भारतेन्दु युग की कविता राष्ट्रीय भावना की कविता हैं। विदेशी वस्तुओं के प्रयोग का बहिष्कार भी उन्होंने किया हैं। देश की जागृति के लिए बार–बार ईश्वर वंदना भी वे करते हैं। देश के सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक तथा धार्मिक पतन को देखकर वे अतीत का गौरव गान भी करते हैं। जिससे साम्प्रदायिक भावनाओं के विकास में आगे चलकर सहयोग मिलें। उनका हिन्दी–हिन्दू–हिन्दूस्तान वाला गुणगान इसी कोटि का हैं ।

अंग्रेजी राज के कारण भारत मुगलों के कठोर शासन से मुक्त हुआ, इसप्रकार का एक दृष्टिकोन भारतेन्दु की कविता में आया हैं। अत्याचार पूर्ण शासन की समाप्ति प्रती वे संतोष जाहिर करते हुए अंग्रेजों प्रति राजभक्ति/निष्ठा को भी इस समय की कविता व्यक्त करते हैं। इस देश में सुधार लाने की गुहार भी वे ब्रिटीशों प्रति लगाते हैं । एक ओर यह कविता देशभक्ति का परिचय देती हैं तो एक ओर राजभक्ति का । स्वंय भारतेन्दु बाबू को ब्रिटिश राज परम मोक्ष

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

का फल लगता हैं –

''परम–मोक्ष फल राजपद परसन जीवन माँही ।
बृटन देवता राजसुत पर परसहु चित चाहि।।''

विद्वानों को राजभक्ति प्रदर्शन के कारण रुप में कंपनी के अत्याचारपूर्ण शासन समाप्ति और नयी शासन एवं नयी व्यवस्था की स्थापना का स्विकार भी लगती हैं –

''लेकर राज कंपनी के कर सौ निज हाथन,
किए सनाथ भोली भारत की प्रजा अनाथन।''

में व्यक्त होती हैं । जिसमें राजभक्ति साफ झलकती हैं , महाराणी विक्टोरिया की घोषणा का स्वागत, विक्टोरिया की मृत्यू पर शोक, लार्ड रिपन के प्रति श्रध्दांजली आदि विषयों पर इस काल के कवियों ने कविता लिखी हैं । फिर भी 'प्रेमधन' जैसे कवि अंग्रेजों को भारत हित के लिए राज करने के लिए कहते हैं

''करहु आज सों राज आप केवल भारत हित,
केवल भारत के हित साधन में दीने चित ।''

विद्वानों का कहना हैं राजभक्ति के अंतर्गत आनेवाली कविता को देखकर कवियों पर राजद्रोह या साम्प्रदायिकता का दोष लगाना नहीं चाहिए। सही भी हैं परंतू इस काल के साहित्य ने साम्प्रदायिकता की प्रवृत्ति का बीजारोपन किया इसे नजरअंदाज नहीं किया जा सकता। नगेन्द्र के अनुसार भले ही 'यह नयी राजनीतिक चेतना की कविता हो' फिर भी यह कहना होगा की स्वतंत्रता के बाद भारत उत्तर नयी राजनीति से रुढ़ होकर सन १९९० के साहित्य, राजनीति में यहीं उभरकर आयी। इसी कारण नवजागरण को ही हिन्दूधर्म पुनरुत्थान के रुप में शंभुनाथ, वीर भारत तलवार जैसे विद्वानों ने देखा जो सही प्रतित होती हैं।

२. नयी सामाजिक चेतना :

युगीन कविता ने नयी सामाजिक समस्याओं पर कविता लिखी। जिसमें सामाजिक समस्याओं को दूर करते हुए, ब्राह्म समाज, आर्य समाज, के आंदोलनों का प्रभाव उक्त काल की कविता पर पड़े। विधवा विवाह का समर्थन, बालविवाह का विरोध, सती प्रथा का विरोध, छुआछूत प्रती उदारता का दृष्टीकोण, सड़ी–गली रुढ़ियों का विरोध, करने के लिए मध्यवर्ग के सामाजिक जीवन का चित्रण कविता में आया। एक तरह से यह कविता जनवाद की ओर दृष्टीपात करती हैं। भारतेन्दु युग के कवियों को समाजसुधार के कवि माना जाता हैं। जिस पर प्रश्न भी उठते हैं। कुछ कवि उदारता का परिचय नहीं देते। 'भारत धर्म' कविता में अंबिका दत्त व्यास द्वारा वर्णाश्रम धर्म का दृढ़तापूर्वक अनुमोदन और राधाचरण गोस्वामी द्वारा विभिन्न कविताओं में प्राचीन शास्त्र–नीतियों का समर्थन एवं विधवा–विवाह का विरोध ऐसे ही उदाहरण हैं। अर्थात यह स्पष्ट हैं की कुछ कवि समाजसुधार के आग्रही थे तो कुछ यथास्थितीवाद को बनाये रखने में धन्यता मानते थे।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

स्वयं भारतेन्दु ने मात्र सुधारणावादी दृष्टीकोन अपनाया हैं। 'भारत दुर्दशा' जैसे नाटकों में वर्णव्यवस्था की संकीर्णता का विरोध उन्होंने किया हैं – बहुत हमने फैलाये धर्म, बढ़ाया छुआछूत का कर्म इनके समकालीन कवि बालमुकुन्द गुप्त ने भी समाजसुधार की दृष्टी अपनायी हैं। धनिकों को संबोधित करते हुए वे कहते हैं –

''हे धनिकों, क्या दीन जनों की, नहीं सुनते हो हाहाकार,
जिसका मरे पडोसी भूखा, उसके भोजन को धिक्कार।
भूखों की सुधि उसके जीं मे, कहिए किस पथ से जावे,
जिसका पेट मिष्ट भोजन से, ठीक नाक तक भर जावें।।''

वस्तुतः आर्य समाज की सामाजिक एवं धार्मिक सुधार वृत्ती का प्रभाव कुछ लेखकों पर स्पष्ट हैं। कुछ सहर्ष स्वीकारते हैं, कुछ नहीं। ऐसे ही वेद मार्ग छोडकर मुस्लिम धर्म संस्कृति को स्वीकारनेवालों की कटु आलोचना राधाचरण गोस्वामी करते हैं।

''यज्ञ,याग, सब मेट पेट भरन में चातुर
पितर पिन्ड नहीं देते यवन–सेवा में आतुर।
पढ़े जनम तैं फारसी छोड, वेद मारग दियो।
हा हा हा विधि वाम ने सर्वनाश भारत कियो।''

'हा हा हा' से स्पष्ट हैं की गोस्वामी की व्यथा कौनसी और किस प्रकार की रहीं हैं ।

प्रतापनारायण मिश्र भी स्त्री शिक्षा प्रति पक्षपाती रवैया अपनाते हैं, बालविवाह का विरोध भी करते हैं और विधवाओं के दुख से विलाप भी करतें हैं–

''निज धर्म भली विधि जानै, निज गौरव पहिचानै,
स्त्रीगण को विद्या देवै, करि पतिव्रता यश लावै।
झूठी यह गुलाब की लाली धोवत ही मिटी जाय,
बाल–ब्याह की रीति मिटाओ रहे लाली मुँह छाय।
विधवा विलपै नित धेनु कटैं कोऊ लागत हाय गोहार नहीं।''

पुराणपंथी दृष्टि के बावजूद भी कविता में बडी मात्रा में सुधारणावादी प्रवृत्तियाँ विद्यमान हैं। एक तरह से मानवतावादी विचारों–भावनाओं का सृजन कर्म इस दौर में शुरू हो चुका था, ऐसा कहा जा सकता हैं।

३. आर्थिक चिंताओं का प्रकटीकरण :–

ब्रिटिशों द्वारा की जानेवाली आर्थिक लूट को देखकर भारतेन्दु का मन भी बडा व्यथित हो चुका था। इसलिए कवियों ने स्वदेशी उद्योगों एवं वस्तुओं का प्रयोग करने का आव्हान किया था। भारतेन्दु ने 'प्रबोधिनी', कविता में विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार को प्रत्यक्ष प्रेरणा दी हैं। भारतीय परिपत्रक पर सवाल उठाते हुए भी ब्रिटीशों की आर्थिक शोषण नीति का विरोध प्रतापनारायण मिश्र जैसे कवियों ने किया हैं –

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

''अभी देखिए क्या दशा देशकी हो,
बदलता हैं रंग आसमां कैसे कैसे!''

सांस्कृतिक राष्ट्रवादियों की ओर से भी, विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार भाव भारतेन्दु में आया हैं। जिसमें वे मलमल और मारकीर का व्यवहार करनेवालों की आलोचना कटु शब्दों में करते हैं –

''मारकीन मलमल बिना चलत कछु नाहिं काम,
परदेसी जुलहान के मानहुँ भये गुलाम।''

तो ब्रिटिशों की साम्राज्यवादी नीति के प्रति गहरा क्षोभ भी कवियों नें व्यक्त करते हुए स्वतंत्रता की माँग की है –

''सब तजि गहौ स्वतंत्रता, नहिं चुप लाते खाब।
राजा करै सो न्याव हैं, पाँसा परे सो दाँव।''

या तत्कालीन भारतीय समाज की आर्थिक दुरावस्था देखकर कवि करुणार्द्र हो जाते हैं –

''रोवहु सब मिलि, आवहु भारत भाई।
हा! हा! भारत–दुर्दशा न देखी जाई।।''

भारत की आर्थिक दुर्गति को ब्रिटीश शासन कारणीभूत रहा हैं, इस बात को कवि भूलते नहीं और वे देशप्रेम भाव को भी व्यक्त करने से चुकते नहीं।

४. जन–जीवन का चित्रण :–

डॉ. रामविलास शर्मा के अनुसार भारतेन्दु युग की जनवादी भावना उसके समाज सुधार में निहित हैं। आगे वे कहते हैं की, वह केवल राजनीतिक स्वाधीनता का साहित्य न होकर मनुष्य की एकता, समता और भाईचारे का भी साहित्य हैं। भारतेन्दु स्वदेशी आन्दोलन के भी अग्रदूत न थे, वे समाज सुधारकों में से भी प्रमुख थे। स्त्री–शिक्षा, विधवा विवाह, विदेश–यात्रा आदि के समर्थक थे। ..... भारतीय महाजनों के पुराने पेशे सूदखोरी की उन्होंने कड़ी आलोचना की थी, सर्वदा से अच्छे लोग ब्याज खाना और चुड़ी पहनना एक–सा समझतें हैं पर अब आलसियों को इसी का अवलंब हैं, न हाथ हिलाना पडे न पैर, बैठे बैठे भुगतान कर लिया। (कविवचन सुधा, २२ दिसम्बर १८७३)

कवियों ने मानवहित के लिए सामाजिक सुधार को अपनाते हुए कुप्रथाओं, धार्मिक मिथ्याचार, छल–कपट, स्वार्थपरायणता, आदि विषयों पर कविता द्वारा प्रहार किया हैं। अंग्रेजों के शोषण विरुध्द जागरण फैलाया हैं। प्राचीन भारतीय संस्कृति के गौरव को आदर्श रुप में प्रस्तुत किया हैं। शासन सुधार की आकांक्षा भी जन–जीवन को व्यक्त करती हैं। अपनी कविता में यथार्थ चित्रण समाज जीवन का ही चित्रण हैं। जन–जीवन को उभारने हेतू उन्होंने लावणी, गजल, ठुमरी, मलार, दादरा जैसे लोकगीतों, संगीत का प्रयोग कविता में भारतेन्दु ने किया हैं। जनता में जागरण हेतू ग्रामगीतों द्वारा उन्नति का मार्ग इन्होंने स्वीकारा हैं।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

५. श्रृंगार की कविता :–

रीतिकालीन भक्ति एवं श्रृंगार की परम्परा भारतेन्दु युग तक चली आयी थी। जिसका प्रभाव उनके साहित्य पर पड़ा हैं। भारतेन्दु वैष्णव परम्परा के उपासक थे। राधा–कृष्ण के प्रति उनमें अनन्य भक्ति थी। सदैव राजसी ठाँट–बाँट से रहते थे। इनमें अनेक गुण थे। पर विलासिता इनका सबसे बड़ा अवगुण था। एक बार इन्होंने कहा था –

''जगत जाल में नित बंध्यो, परयो नारि के कंद।
मिथ्या अभिमानी पतित, झुठो कवि हरिचन्द।।''

उन्होंने राधा–कृष्ण के प्रेम का वर्णन किया हैं, माधुर्य भक्तिपरक श्रृंगार चित्रण, रीतिकालीन पध्दति पर नखशिख, षड़ऋतु और नायिका भेद वर्णन, उर्दु प्रभाव संपर्क में वेदनात्मक प्रेमाभिव्यक्ति भारतेन्दु और प्रेमधन की रचनाओ में मिलती हैं। प्रेमसरोवर, प्रेममाधुरी, प्रेमतरंग, प्रेमफुलवारी आदि रचनाओं में भारतेन्दु ने भक्तिश्रृंगार और विशुध्द श्रृंगार का वर्णन किया हैं। सौन्दर्य, प्रेम, विरह की व्यंजना में कहीं, कहीं. ये दोनों उर्दु – काव्यशैली के प्रभाव में हैं।

प्रेमादर्श में वे घनानंद, रसखान, एवं पद्माकर जैसे रीतिकालीन कवियों का अनुसरण करतें हैं –

साजि सेज रंग के महल में उमंग भरी।
पिय गर लागी काम–कसक मिटाये लेत।।
ठानि विपरीति पूरी मैन मसूसन सों।
सुरत–समर जय पत्रहि लिखायें लेत।।
हरीचन्द उझकि उझकि रति गाढ़ी करि।
जोम भरी पियहि झकोरन हराये लेन।।
याद कर पी की सब निरदय घातें अजु।
प्रथम समागम कौ बदलो चुकाये लेत।।

उन्होंने रीतिकालीन कवियों की तरह यौन–विकृति जैसे स्वरति, समरति, चित्ररति, वस्त्ररति, पपडीपन, रति इत्यादि का वर्णन किया हैं। बिहारी, सुरदास जैसे साहित्यिक श्रृंगार की झलक भी इनकी कविता में पायी जाती हैं। बिहारी की तर्ज पर – इन दुखिया अँखियान को सुख सिरज्यो ही नाँही।

इन दुखियान को न सुख सपने हुँ मिल्यों
यों ही सदा व्याकुल विकल अकुलायेंगी।
बिना प्रान प्यारे भये दरस तिहारे हा,
देखि लीजों आँखे ये खुली रह जायँगी।।

सुरदास की तर्ज पर –

सखि ये नैना बहुत बुरे।
तब सों भये पराये, हरि सों जब सों जाइ जुरें।

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

मोहन के रस भर हैं डोलत तलफल तनिक दुरे।

अन्य कवियों में राधाकृष्ण दास, ठाकुर जगनमोहनसिंह, अंबिका दत्त व्यास में श्रृंगार वर्णन पाया जाता हैं ।

६. भक्ति भावना :–

हमने पहले ही कहा हैं की भारतेन्दु वैष्णव भक्त थे। राधा–कृष्ण के प्रती उनमें भक्ति थी। बल्लभ सम्प्रदाय में वह दीक्षित थे।

''मेरे तो राधिका नायिका हो गति
लोक दोऊ रहौ कै नसि जाओ।
मेरे तो साधन एक ही हैं,
जय नंदलाला वृषभानु कुमारी।''

उनके काव्य में विनय–भाव की भक्ति प्राप्त होती हैं। प्रेमधन ने 'अलौकिक लीला' नामक कविता में स्फुट भक्ति पदों को रखा हैं, अंबिका दत्त व्यास की 'कंसवध' जैसी प्रबंध रचना राधाकृष्णदास की विनयभावयुक्त कृष्ण स्तुती का उल्लेख भारतेन्दु युगीन कृष्णभक्ति काव्य के संदर्भ में आवश्यक है। इसके अलावा प्रेमधन की 'सूर्यस्त्रोत', भारतेन्दु की 'उत्तरार्ध भक्तमाल', और 'कार्तिकस्नान', प्रतापनारायण मिश्र की 'नवरात्र के पद', और राधाचरण गोस्वामी की 'नवभक्तमाल' उल्लेखनीय कृतियाँ हैं।

भारतेन्दु में भक्ति देशानुरागी भाव भी दिखाई देता हैं। अर्थात वह देशहित की कामना करता हैं। साम्प्रदायिक मत–मतान्तरो पर आधारित धार्मिकता के स्थान पर उन्होंने उदारता का परिचय दिया हैं। 'जैन कुतुहल' में उन्होंने धार्मिक विद्वेष की व्यर्थता को प्रतिपादित किया हैं। धर्मनिरपेक्षता का भाव उनमें है ऐसा कहा जाता है। फिर भी उसमें धार्मिक एकांगिता की चर्चा सामने आ रही हैं। उनकी धार्मिकता पर प्रश्न उठ रहें हैं। प्रतापनारायण मिश्र, राधाकृष्णदास जैसे कवियों में भी देशानुराग भक्ति को देखा जा सकता हैं।

८. प्रकृति चित्रण :–

रीतिकाल की तरह प्रकृति का स्वतंत्र चित्रण का अभाव भारतेन्दु युगीन कविता में रहा है और वह स्वाभाविक है सौन्दर्य बोध में सहायक स्वतंत्र प्रकृति चित्रण का श्रेय किसी सीमा तक ठाकुर जगमोहनसिंह को ही दिया जा सकता हैं। भारतेन्दु समवेत अन्य कवियों ने परम्परा का निर्वाह किया गया हैं। ''अम्बिकादत्त व्यास की 'पावस पचासा', गोविन्द गिल्लाभाई की 'षडऋतु', और 'पावस पयोनिधी', आदि कृतियों में वसंत और वर्षा ऋतु का आलंबनात्मक चित्र मौजुद हैं।'' भारतेन्दु की 'प्रात समीरन', प्रेमधन की 'मयंक महिमा' और प्रतापनारायण मिश्र की 'प्रेम पुष्पांजली' में स्वतंत्र प्रकृति चित्रण हैं किन्तु सफलतापुर्वक नहीं ऐसा मत नगेन्द्र व्यक्त कर चुके हैं क्योंकि ''प्रकृति को श्रृंगारिक मनोदशाओं, सामाजिक उद्‌बोधन, नीति कथन आदि से संबंध्द करने की अनिवार्यता ने'' प्रकृति का स्वतंत्र वर्णन इस काल में रूप ग्राहक नहीं

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

कर पाया परंतु रीतिकाल के उद्दीपक वर्णन को न स्वीकारते हुए संस्कृत काव्य में उपलब्ध नैसर्गिक सौन्दर्य वर्णन से प्रकृति का सजीव चित्रण उनके काव्य में आया हैं। पर्वत क्षृंखला का सौन्दर्य चित्रण इसी प्रकार का हैं–

''पहार अपार कैलास से कोटिन उंची शिखा लगि अम्बर चूम।
निहारत दीठि भ्रमै पगिया गिरि जाक उत्तंगता ऊपर झूम ।
प्रकाश पतंग सो चोटिन के बिकसें अरविन्द मलिन्द सुझूम।
लसै कटि मेखला के जगमोहन कारी घटा घन घोरत धूम।।''
(वही– पृ. ४५६)

९. हास्य–व्यंग्य :–

हास्य–व्यंग की अभिभक्ति भी इस युग की महत्वपूर्ण विशेषता हैं। हास्य–व्यंग को राष्ट्रीय समस्याओं से जोडने का प्रयास इस काल में हुआ हैं। पश्चिमी सभ्यता, विदेशी शासन, सामाजिक अंधविश्वासो, रुढ़ियों, पर कवियों ने कठोर व्यंग्य किए हैं। उनमें विषय एवं शैली की भिन्नता भी रही हैं। निम्नलिखित विषयों पर इन कवियों ने हास्य–व्यंग लिखे हैं। एक प्राचीन रुढ़िगत विकृतियों पर, दो विदेशी संपर्क में भारतीयों की स्थिती पर, तीन भक्ति संबंधी संकीर्ण विचारों पर, चार विकृत सांस्कृतिक जीवन पर, पाँच राजनैतिक व्यवस्था पर महत्व आदि पूर्ण हैं। राजनैतिक व्यंग में उल्लेखनिय है – अंग्रेजो की शोषण नीति, भारतीयों की निष्क्रियता एवं नपुसंक मनोवृत्ति, पराधीन वृत्ति आदि। छह साहित्यिक एवं भाषागत विचार पर खासकर उर्दु के आग्रह पर। भारतेन्दु की तीन व्यंग शैलियाँ हैं – पैरोडी, स्यापा और गाली। डॉ. नगेन्द्र कहते हैं, 'बन्दरसभा' के गीतों की रचना उन्होंने उर्दु नाटक इन्दर सभा के गीतों की पैरोडी के रुप में की हैं। उर्दु का स्यापा उर्दु–फारसी के स्यापा, नामक काव्यरुप की शैली में लिखित हैं। है–हैं उर्दु हाय–हाय, कहाँ सिधारी हाय–हाय, आदि पंक्तियों में उन्होंनें बनारस अखबार के समाचार–शीर्षक उर्दु मारी गयी पर व्यंग किया हैं। 'समधिन मधुमास' की रचना 'गाली' व्यंगगीति की शैली में की गयी हैं। नये जमानें की मुकरी, समकालीन सामाजिक, राजनीतिक विसंगतियों पर लिखी हैं। साथ ही प्रतापनारायण मिश्र की हरगंगा, बुढ़ापा, कारष्टक, आदि प्रसिध्द रचनाएँ हैं। भारतेन्दु में अमीर खुसरो की मुकरी शैली स्पष्ट होती हैं। मद्यपान संबंधी व्यंग का उदाहरण है –

''मुँह जब लागै तब नही छुटे, जाति मान धन सब कुछ लूटे।
पागल करि मोहि करे खराब, क्यों सखि सज्जन नहीं सराब।।''

१०. रीति–निरुपण के परम्पराबध्द ग्रंथो की रचना :–

रीति–निरुपण संबंधी परम्परा से संबंध ग्रंथो का लेखन भी इस कालखन्ड में हुआ हैं। भारतेन्दु युग में लछिराम, बह्मभट्ट, कविराजा मुरारिदान और बालगोविन्द मिश्र आदि रीति–निरुपण पध्दती ग्रंथ लिख रहे थे। जिसमें प्रमुख हैं लछिराम की महेश्वर विलास जिसमें नायिकाभेद एवं नवरस का विश्लेषण हैं, 'रामचन्द्रभूषण' अलंकार शास्त्र का ग्रन्थ है, 'रावणेश्वर कल्पतरु' सर्व–काव्यांग निरुपण कृती हैं। मुरारिदान का 'जसवन्त जसोभूषण' बृहत काव्य

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

शास्त्रीय ग्रंथ हैं। ''यह मुलतः अलंकार ग्रंथ हैं जिसमें काव्य–स्वरुप, शब्दशक्ति, गुण और रीति का सार मौजुद है। बालगोविन्द मिश्र का 'भाषा छन्द प्रकाश' में अड़तालीस मात्रिक–वार्णिक छन्दों का स्वरचित काव्य–लक्षण–उदाहरण प्रस्तुत है। अन्य दो उल्लेखनिय रचनाकार हैं प्रतापनारायणसिंह की 'रसकुसुमाकर' (१८९४) और कन्हैयालाल पोद्दार की 'अलंकार प्रकाश' (१८९६).

महत्वपूर्ण बात यह भी है की रीति–निरुपण की वृत्ती पिछड़ती जा रही थी और काव्य नये साँचे में ढ़ल रहा था। भारतेन्दु के बाद तो यह प्रवृत्ति रही ही नहीं।

११. समस्यापूर्ति परक काव्य रचना :

समस्यापूर्ति परक काव्य रचना इस काल में बडी लोकप्रिय रही हैं। बकायदा इस प्रकार की काव्य गोष्टियों का आयोजन किया जाता था और बड़े–बड़े कवि उसमें ससम्मान भाग लेते। कठिन से कठिन विषयों पर समस्यापूर्ति करायी जाती। कहा जाता हैं की, अम्बिकादत्त व्यास ने अपने कवि जीवन का आरंभ काशी से 'कविता वर्धिनी सभा में' पुरी अम्मी की कटोरिया–सी, चिरंजीवी रहें विक्टोरिया रानी, समस्या की पूर्ति करके सुकवि की उपाधी पायी थी। कानपूर की रसिक समाज, बाबा सुमेरसिंह द्वारा निजामाबाद (जिला आजमगढ़) की 'कवि समाज' काफी प्रसिध्द मंच हैं।

अम्बिकादत्त के पिता दुर्गादत्त व्यास का 'समस्यापूर्ति–प्रकाश' अम्बिकादत्त व्यास का 'समस्यापूर्ति सर्वस्व', गोविन्द गिल्लाभाई का 'समस्यापूर्ति प्रदीप', गंगाधर द्विजगंग का 'समस्या प्रकाश', नर्मदेश्वरप्रसाद सिंह का 'पंचरत्न', तथा भारतेन्दु ग्रंथावली में समस्यापूर्तियों का संग्रह उपलब्ध हैं। प्रतापनारायण मिश्र की समस्यापूर्ति काव्य का एक उदाहरण देखिए –

वन बैठी है मान की मूरति–सी, मुख खोलत बोलें न 'नाही' न हां।
तुम ही मनुहारी कै हारि परे, सखियान की कौन चलाई तहां।।
बरषा है 'प्रतापजू', धीर धरों, अब लो मन को समझायो जहाँ।
यह ब्यारि तबै बदलेगी कछू, पपीहा जब पुछिहै पीव कहाँ?

१२. काव्यानुवाद का आरंभ :

काव्यानुवाद की परम्परा भी इसी युग से शुरु हो चुकी है। संस्कृत और अंग्रेजी के काव्यानुवाद बड़ी मात्रा में हुए है। सर्वप्रथम उल्लेखनिय हैं, राजा लक्ष्मणसिंह का 'रघुवंश' और 'मेघदूत'। भारतेन्दु ने 'नारद–भक्ति–सूत्र' और शांडिल्य के 'भक्तिसूत्र' को 'तदीय सर्वस्व' और 'भक्तिसूत्र वैजयन्ती' नाम से अनुवाद किया हैं। बाबू तोताराम ने वाल्मिकी रामायण का 'राम–रामायण', ठाकुर जगमोहनसिंह ने 'ऋतूसंहार' एवं 'मेघदूत', लाला सीताराम भूप ने 'मेघदूत', 'कुमार संभव', रघुवंश और ऋतूसंहार।

अंग्रेजी से श्रीधर पाठक ने गोल्डस्मिथ का 'हरमिट' और 'डेंजर्टेड विलेज' को 'एकांतवासी योग' तथा 'उजड ग्राम' नाम से अनुवाद किया हैं । भाषा, लालित्य, शब्दानुभाव,

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

सरलता को गुणों से ये संपन्न हैं ऐसा डा. नगेन्द्र ने कहा हैं ।

१३. काव्य रुपों की विविधता :

भारतेन्दु युग में काव्य रुपों के विविध प्रयोग रुढ हो गये कुछ परम्परागत, लोकगीत, संगीतात्मक थे तो व्यंग नये रुप में विकसित हुए किन्तु प्रधानता मुक्तक काव्य की ही रही हैं। उसके साथ प्रबंध गीति में भारतेन्दु के रानी छद्मलीला, देवी छद्मलीला, और 'तन्मयलीली' का उल्लेख किया जाता हैं। निबंध काव्य रुपों में 'विजयिनी विजय वैजयन्ती' तथा हिन्दी भाषा महत्वपूर्ण हैं। कुछ सतसई परम्परा के उदाहरण भी देखे जा सकते हैं। हरीऔध का कृष्णशतक (१८८२) अम्बिकादत्त व्यास का 'सुकवि सतसई' आदि।

प्राचीन पद शैली के आधार पर ठुमरी, मलार, दादरा, ईमन, आदि राग–रागिनीयों में काव्य रचनाएँ की गई हैं। लोकसंगीत की शैली काफी लोकप्रिय थी उदाहरणार्थ ''प्रेमघन और प्रतापनारायण मिश्र की कजलियाँ तथा भारतेन्दु (वर्षा विनोद) प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी और जगनमोहनसिंह की लाषनिया महत्वपूर्ण हैं।'' व्यंग में बंदर सभा, उर्दू का स्यापा एक नए शैली में आयी हैं। भारतेन्दु ने मुकरियों का लेखन भी किया हैं। गज़ल का नवप्रयास 'रसा' उपनाम से भारतेन्दु द्वारा तथा 'अब्रु' उपनाम से प्रेमधन द्वारा किया गया हैं। इससे यह कहा जा सकता हैं की काव्य के परम्परागत रुपों में इस काल के कवियों ने बंधे न रहकर नये प्रयोग भी किये हैं।

१४. भाषा :

भारतेन्दु युग में काव्य के क्षेत्र में ब्रजभाषा का प्रयोग हुआ तो गद्य के क्षेत्र में खड़ी बोली का। हिन्दी–उर्दु का विवाद इस काल के राजनीति की देन रही फिर भी भारतेन्दु ने हिन्दी के दायित्व को 'हिन्दी भाषा' नामक ग्रंथ लिखकर पूर्ण किया। उन्होंने ''उर्दु–फारसी की जटिलतम तत्सम शब्दावली का बहिष्कार भी किया'' काव्य में ब्रज के साथ–साथ अन्य बोली भाषा शब्दों के प्रयोग दिखाई देता हैं, जैसे भोजपूरी, बुंदेलखंडी, अवधी, आदि। इसके अलावा उर्दु–अंग्रेजी का प्रयोग भी किया गया हैं।

ब्रजभाषा और खड़ीबोली को लेकर आंदोलन चला। अयोध्याप्रसाद खत्री ने खडीबोली का आंदोलन (१८८८) में चलाया। कुछ कवियों ने विरोध भी किया। परिणामतः खडीबोली गद्य के साथ पद्य का विकास हुआ। आगे चलकर दिवेदी युग में यह विवाद खत्म हुआ। काव्य क्षेत्र में भी खडीबोली का प्रयोग होने लगा।

१५. छंद–अलंकार :

भारतेन्दु युगीन कवियों ने परम्परागत छंद–अलंकारो का प्रयोग अपनी कविताओं में किया हैं । जिसमें उल्लेखनिय हैं, आर्या, कुण्डलियाँ, दोहा, चौपाई, सोरठा, रोला, हरिगीतिका जैसे मात्रिक छंदो तथा कविता, सवैया, मन्दाक्रान्ता, शिखरिणी, वंशस्थ, वसन्ततिलका जैसे वर्णिक छंदों का विविधमुखी प्रयोग ''लोकसंगीत का गाँवो में प्रचार–प्रसार करने के लिए

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner

भारतेन्दु ने कजली, ठुमरी, खेमटा, कहरबा, गेल, चैती, अद्ध, होली, साँझी, लाबें, लावनी, बिरहा, चनैनी, आदि छंदो को उपयोग में लाया हैं। इस प्रकार के प्रयोग का आवाहन भी वे कवियों को कर चुके थे।'' किसी नये छंद का प्रयोग भले ही इन कवियों ने न किया हो परंतु काव्य की नई उद्‌भावना विषय एवं शैली के दृष्टि से मौलिक रही हैं ।

५अ.३ मूल्यांकन :

इस विवेचन–विश्लेषण से यह ज्ञान होता हैं, की भारतेन्दु समेत अन्य कवि अपने दाय का सुयोग्य निर्वाह कर चुके हैं। अपनी अनुभूती को माध्यम बनाकर, स्वभाषा, स्वधर्म, स्वजाति का प्रचार कर देशोन्नती, एवं राष्ट्रीय भावनाओं को जगाने का प्रयास प्रशंसनीय हैं । खड़ीबोली को काव्य–भाषा का माध्यम बनाया। उसमें काव्य के साथ, निबंध, नाटक, कहानियाँ, उपन्यास, लेख लिखे गये हैं। विभिन्न पत्र–पत्रिकाओं का संपादन, प्रकाशन भी इस युग की महत्वपूर्ण घटना हैं। जनवादी विचारधारा की अभिव्यक्ति, लोकगीत शैली का स्विकार इस युग के महत्वपूर्ण मूल्य हैं। जीवन के यथार्थ को उन्होंने सामाजिक स्वर दिया, प्रत्येक विधा में। बहुत सारे अंतर्विरोध भी उनके काव्य में पाये जाते हैं। राष्ट्रीयता, राजभक्ति, राजद्रोह, नयी भाषा (खड़ीबोली), पुरानी भाषा (ब्रज) नये पुराने दृष्टिकोन, इन सब में समन्वय की भावना आदि।

भारतीय समाज, साहित्य, राजनीति के इतिहास में यह नवयुग, नवजागरण, के नाम से जाना जाता हैं। जिसके अग्रदुत स्वयं भारतेन्दु बाबु रहे हैं।

५अ.४ उपसंहार :

भारतेन्दु युगीन साहित्यकारों ने विभिन्न स्तर पर जन जागरण का कार्य किया। साहित्यिक रचनाओं के जरिए वे स्वाधिनता आंदोलन से जुड़े रहें। उस बढ़ावा दिया। गद्य का नये रुपों में विकास हुआ। रंगमंच का आधुनिक अविष्कार भी इन साहित्यकारों ने, विशेष भारतेन्दु ने महसुस किया। जीवन के सत्यों को नैतिक साहस के बल पर जनता के सम्मुख रखा। तत्कालीन राजनीतिक, सामाजिक, धार्मिक, जीवन की सच्चाईयों से हमें रुबरु कराया। यह इस युग महत्वपूर्ण की देन हैं।

५अ.५ बोध प्रश्न :

१. भारतेन्दु युगीन काव्य की प्रवृत्तियों को अंकित कीजिए।
२. भारतेन्दु युगीन काव्य की विशेषताओं पर सोदाहरण चर्चा किजिए।

◆◆◆◆◆◆

Scanned with CamScanner

Scanned with CamScanner